अपनी दुनिया

अंक 19 सितम्बर 2017 हम बच्चों का अपना अखबार (सीमित वितरण के लिए) अनियमित प्रकाशन

खास रिपोर्ट

सतत विकास लक्ष्य

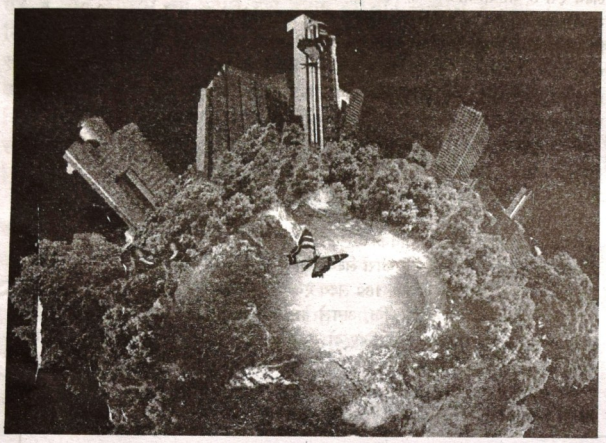

हमारी खूबसूरत दुनिया ऐसा ग्रह है जिसे जीवन की संभावनायें अनूठा बनाती हैं। हमारी धरती के अलावा ब्रह्मण्ड में कोई भी ऐसा ग्रह नहीं खोजा जा सका है जहाँ जीवन फल–फूल सकता हो। धरती पर जीवन क्रम विकास का एक दस्तावेज है और मानवसभ्यता उसका एक अध्याय। यह दस्तावेज बताता है कि आदिम मानव सभ्यता गुफा, कन्दराओं से निकल कर आज इक्कीसवीं सदी में प्रवेश कर चुकी है। इसी बीच मानव ने सामाजिक आर्थिक और राजनैतिक रुप से काफी विकास किया। विज्ञान की प्रगति ने हमारे जीवन को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। दुनिया में औद्योगिक क्रान्ति हुई सड़क मार्ग, जलमार्ग, वायुमार्ग विकसित हुए बड़े–बड़े बांध तकनीकी विकास में कृषि उत्पादन बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। इसका चरम आज हम सूचना प्रौद्योगिकी, नैनो टैक्नोलॉजी जैसे रुपों में देख रहे हैं। चांद पर जाने के बाद दुनिया के वैज्ञानिक मंगल पर मानव बस्तियां बसाने की कल्पनाओं को साकार करने की ओर कार्य कर रहे हैं। एक ओर विकास की इस प्रक्रिया ने हमारे जीवन स्तर में सुधार किया दूसरी ओर इसने हमारे समक्ष कई गंभीर संकटों को जन्म दिया। पर्यावरणीय संकट, आर्थिक सामाजिक असमानताओं जैसे रुपों में यह संकट आज की हमारी दुनिया के लिए सबसे बड़ी चुनौती हैं। धरती पर जैविक साधन सम्मिलित है तीव्र औद्योगिक विकास ने प्रकृति का जिस गति से दोहन किया है वह बेहद चिंताजनक है। यह आने वाली पीढ़ियों के समक्ष जैविक संसाधनों का संकट पैदा कर देगा। हमारी धरती पर बढ़ता प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन वैश्विक तापवृद्धि कम होती जैवविविधता, पारिस्थितिकीय असंतुलन इसी का नतीजा है। इसने कई सामाजिक आर्थिक असमानताओं को भी जन्म दिया। दुनिया भर में कुछ लोगों के पास संसाधन हैं वहीं दुनिया की आबादी का एक बड़ा हिस्सा बुनियादी सुविधाओं के लिए संघर्ष कर रहा है। तमाम प्रगति के बावजूद भूखमरी और गरीबी हमारी दुनिया की हकीकत है। आज पूरी दुनिया में 836000000 लोग गरीब में जीवनयापन कर रहे हैं। आंकड़ों के अनुसार दुनिया में लगभग 80 करोड़ लोग कुपोषण का शिकार हो जाते हैं।

खेती में रसायनों और तकनीक के प्रयोग, बाजार आधारित खेती ने उत्पादन बढ़ाया पर इसने भूमि की उर्वरता, पारंपरिक खेती, पारंम्परिक बीजों और फसलों की विविधता को गंभीर नुक्सान पहुंचाया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार दुनियाभर में सालाना 4500,000 बच्चों की एक साल की उम्र पूरी करने से पहले हो जाती है। आज भी बड़ी संख्या में लोग स्वास्थ्य सुविधा, टीकाकरण से वंचित है। एड्स तपेदिक, मलेरिया जैसे रोगों से लाखों लोग संघर्ष कर रहे है। खतरनाक रसायनों, हवा मिट्टी, पानी का प्रदूषण के कारण भी दुनिया में लाखों लोग गंभीर रूप से प्रभावित होते हैं। देश और दुनिया के स्तर पर सभी बच्चों को अच्छी गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराना अभी भी एक सपना बना हुआ है। इसके लिए न तो पर्याप्त संख्या में स्कूल हैं न पठन–पाठन सुविधायें और अध्यापक। आज भी लाखों बच्चे पढ़ाई के बजाए बाल मजदूरी करने को विवश हैं उनको खतरनाक उद्योगों और युद्ध में इस्तेमाल किया जा रहा है। जहां उनके जीवन पर संकट मंडराता रहता है। बाल अधिकारों का हनन होता है। स्त्री पुरूष असमानता भी इस युग की एक प्रमुख चुनौती है। यही कारण है कि कन्या भ्रूण हत्या, महिला हिंसा, बाल विवाह, जबरदस्ती विवाह शिक्षा/स्वास्थ्य/विकास में भेदभाव जैसी विकृतियों से मुक्ति संभव नहीं हो पाई हैं।

आधुनिक युग में अधिकाधिक संख्या में लोग शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं। शहरीकरण की स्थिति अनियंत्रित होती जा रही है। शहरों में लोगों को आवास, पेयजल, कूड़ा निस्तारण प्रदूषण जैसी समस्याओं से जूझना पड़ रहा है। हमारी दुनिया की एक और चुनौती सभी को पीने का साफ पानी, जल मल निकासी की उपयुक्त सुविधा युक्त स्वच्छ वातावरण प्रदान करने की है। हमारी आबादी का एक हिस्सा स्वच्छता के उच्च मापदंडों पर चलता है तो दुनिया की आबादी के एक बड़े हिस्से के पास पीने का साफ पानी, जल मल निस्तारण की सुविधा और साफ वातावरण नहीं है। इससे इनके स्वास्थ्य पर सीधा असर पड़ता है और कई संक्रामक बीमारियां भी इनको घेर लेती हैं। स्वास्थ्य सुविधाओं का फैलाव न होने के कारण छोटी सी समस्या भी गंभीर बन जाती हैं।

उपरोक्त बातों से स्पष्ट होता है कि विकास का यह तरीका हमारे लिए कितने बड़े संकट भी साथ लेकर आया इन संकटों के बीच दुनिया में कई लोग कई संगठन थे जिनको इस बात की चिन्ता थी कि यह तरीका हमारी धरती और आने वाली पीढ़ियों के लिए खतरा है। इनका मानना था कि, विकास के साथ–साथ पर्यावरण, परिस्थितिकी का भी ध्यान रखा जाए। प्राकृतिक संसाधनों का सीमित उपयोग कर भावी पीढ़ियों के लिए उनको बचाया जाए। विकास के इस तरीके को उन्होंने सतत विकास **sustainable development** का नाम दिया। संयुक्त राष्ट्र संघ भी इन संगठनों में प्रमुख था। 1972 में हुए संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण सम्मेलन में पहली बार दुनिया के देशों ने माना कि पर्यावरण का संकट हमारे लिए गंभीर चुनौती है इससे तभी

अपनी बात

आदिम युग से आज के युग तक इंसान की यात्रा विकास की सहारे ही यहां तक पहुंची है। क्योंकि विकास मानव जीवन का अनिवार्य अंग है। यह लगातार चलने वाली प्रक्रिया है। भोजन पकाकर खाने से लेकर कपड़ा पहनना, बोलना, भाषा, परिवार, समाज का गठन, ज्ञान, संस्थाओं का निर्माण, संस्कृति आदि सभी विकास की ही देन है। आज विकास को लेकर चर्चाऐं बहुत है वर्तमान में सामाजिक एवं राजनीतिक स्तर पर विकास एक प्रमुख मुददा बना हुआ है। लेकिन वह भौतिक विकास को अधिक मानता है जिसने मानवता के संपूर्णता में विकास के दृष्टिकोण को ही संकुचित कर दिया है। हजारों साल से चली आ रही विकास की प्रक्रिया मानवीय मूल्यों और दुनिया के सभी वर्गो के समान रूप से आगे बढ़ने पर अधिक केंद्रित थी। हालांकि राजे रजवाड़ों का सुविधाजीवी वर्ग बहुत छोटा था फिर भी वहां अधिक लोगों की चिंता थी और उनके हितों की बात थी जहां व्यक्ति, प्रकृति और समाज विकास के केंद्र में अधिक थे। विकास के वर्तमान मॉडल के कारण मानव–मानव के बीच खाई पैदा हो रही है। लगातार गैर बराबरी, भुखमरी, अशिक्षा, पिछड़ापन, युद्ध आदि इसके परिणाम है। विकास की इस गति के कारण ही हमारे सामने ये समस्याएं खड़ी हुई है। जिस कारण आज विश्व को सतत् विकास के लक्ष्य निर्धारित करने पड़े। आज जलवायु परिवर्तन, वायु, जल, मृदा प्रदूषण, बीमारियों का फैलाव, जैसी अनेक समस्याएं खड़ी हो रही है। हमारी धरती पर जैविक संसाधन असीमित रूप में नहीं उपलब्ध हैं। विकास के इस तरीके ने हमारी आने वाली पीढ़ियों के सामने, जैविक संसाधनों की उपलब्धता का संकट पैदा कर दिया है। यानि विकास का जो तरीका हमने अपनाया उसने उपलब्ध जैविक संसाधनों का अत्यधिक दोहन कर प्रकृति के साथ पशुओं जैसा व्यवहार किया है। दरअसल विकास शब्द की उत्पत्ति ही गरीब, उपेक्षित और पिछड़े सदर्भो में हुई है। इनको अलग रखकर हम विकास की कल्पना कैसे कर सकते है। जब हम विकास को समग्रता के साथ देखते हैं तो इसमें ढांचागत विकास के साथ साथ मानव संसाधन, प्राकृतिक संसाधन व सामाजिक व आर्थिक तथा नैतिक, राजनीतिक व सांस्कृतिक विकास भी शामिल होता है।

एक व्यक्ति के तौर पर विकास बदलाव की एक ऐसी प्रक्रिया है, जो लोगों को इस लायक बनाती है कि वे अपने अंदर छिपी संभावनाओं को पहचानकर आत्मनिर्भर हो सकें। साथ ही समाज और राष्ट्र के लिए अपनी भूमिकाओं का निर्वाह कर सके। हमारे विकास के अपूर्ण मॉडल के परिणाम स्वरूप सतत् विकास लक्ष्य जैसी अवधारणा हमारे सामने आई है। उम्मीद की जानी चाहिए कि आने वाले दिनों में दुनिया के सभी देश ही क्यों, दुनिया का हर नागरिक इन खतरों से आगाह हो और सतत् विकास लक्ष्यों को समझते हुए इस दिशा में अपना हर कदम बढ़ाए। आशा करते हैं कि यदि ईमानदारी से विश्व स्तर पर इन प्रयासों को आगे बढ़ाया गया तो हम धरती में आने वाले सालों में अच्छे संकेत देख सकते हैं, कम से कम यह धरती हमारे रहने लायक तो बची रहेगी इसकी पूरी उम्मीद है। आज यह तय है कि यदि हमें स्वयं, अपनी धरती, को बचाना है तो विकास के सर्वमान्य ऐसे मॉडल को हमें विकसित करना होगा जो प्रकृति के सभी घटकों को साथ लेकर चले।

निबटा जा सकता है जबकि इसके लिए दूरदर्शी सोच, सभी देशों का सहयोग और शांतिपूर्ण वातावरण हो। इस तरह विकास और पर्यावरण में सामंजस्य बिठाने की सोच आगे बढ़ी। 1983 में संयुक्त राष्ट्र के पर्यावरण विकास आयोग की एक रिपोर्ट अवर कॉमन फ्यूचर नाम से प्रकाशित हुई। इसमे विकास की नई परिभाषा देते हुए कहा गया कि, विकास पर्यावरण का संरक्षक होगा। विकास की प्रक्रिया इस तरह से चले कि, वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ ही आने वाली पीढ़ियों की जरूरतों का भी ध्यान रखा जाए। इसमें पहली बार सतत विकास शब्द का इस्तेमाल किया गया। 1992 में संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा आयोजित रियो पृथ्वी सम्मेलन पर्यावरण केन्द्रित विकास की दिशा में मील का पत्थर माना जा सकता है। इसमें 182 देशों के 20,000 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस सम्मेलन मे शामिल देश इस बात पर सहमत हुए कि, लम्बे समय तक चलने वाला आर्थिक विकास तभी संभव है जब इसे पर्यावरणीय सुरक्षा से जाए। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए दुनिया के देशों को मिलकर काम करना होगा। विकास की प्रक्रियाओं में सरकारों के साथ ही नागरिकों को भी शामिल करना होगा। इसमें विकास के लिए 27 सिद्धान्तों पर सहमति बनी। यह सिद्धान्त विकास के आर्थिक, पर्यावरणीय, सामाजिक, राजनैतिक घटकों के बीच सामंजस्य बनाने पर बल दिया।

इस दिशा में कदम बढ़ाते हुए वर्ष 2000 में सहस्राब्दी शिखर सम्मेलन के दौरान वर्ष 2015 तक के लिए आठ वैश्विक लक्ष्य निर्धारित किये गये। इन आठ लक्ष्यों को सहस्राब्दी विकास **(Millennium Development Goals)** लक्ष्य कहा गया।

इस सम्मेलन में संयुक्त राष्ट्र संघ के 189 देशों और 22 अंर्तराष्ट्रीय संस्थाओं ने भागीदारी की। इन लक्ष्यों के रूप में संकल्प व्यक्त किया गया कि, अगले पंद्रह वर्षों में दुनिया से भूख और गरीबी को पूरी तरह समाप्त किया जायेगा। इस अवधि में दुनिया में सभी को सुलभ प्राथमिक शिक्षा उपलब्ध कराई जायेगी। दुनियाभर से महिला पुरुष भेदभाव खत्म किया जायेगा और महिलाओं व बालिकाओं को सशक्त बनाया जायेगा। बच्चों को जन्म देने वाली माताओं के स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान होगा उनको समुचित चिकित्सा और पोषण उपलब्ध कराया जायेगा। दुनियाभर में जन्म लेने वाले बच्चों की मृत्युदर को घटाना एवं एड्स, मलेरिया जैसी बीमारियों का दुनिया से खात्मा भी इन लक्ष्यों में प्रमुखता से थे। इन लक्ष्यों में कहा गया कि पर्यावरणीय संतुलन सततता और दुनिया में विकास के लिए दुनिया के विभिन्न देशों को आपसी सहयोग करना होगा।

1 जनवरी 2000 से लागू सहस्राब्दी विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए तय पंद्रह वर्षों में दुनिया के देश इस दिशा में कुछ आगे बड़े परन्तु सभी लक्ष्य प्राप्त नहीं किये जा सकें। इस अवधि के समाप्त होने पर इन लक्ष्यों की स्थितियों की समीक्षा करने के बाद संयुक्त राष्ट्र और सदस्य देश इस नतीजे पर पहुंचे कि दुनिया से भूख, गरीबी, सामाजिक असामनता दूर करने के लिए इन लक्ष्यों की प्राप्ति जरूरी है जो प्राप्त नहीं हो पायी है। 2015 में न्यूयार्क में हुए संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन इस बात पर सहमति बनी कि, पिछले लक्ष्यों का विस्तार करते हुए नये विकास लक्ष्य तय किये जाऐं। अतः भारत समेत दुनिया के 193 देशों ने अगले पंद्रह वर्षों के लिए सतरह नये लक्ष्य तय कर उनकी प्राप्ति का संकल्प लिया।

1 जनवरी 2016से प्रभाव में आये 'संयुक्त राष्ट्र संघ' द्वारा तय इन लक्ष्यों को सतत विकास लक्ष्य 2030 का नाम दिया गया। सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने की समय सीमा पंद्रह वर्ष तय की गई है। सतत विकास का लक्ष्य 17 लक्ष्यों आदि 169 सहायक लक्ष्यों का समूह है जिसको संयुक्त राष्ट्र संघ के सभी सदस्य देशों ने स्वीकार करते हुए सतत विकास को जारी रखने की ओर कदम बढ़ाया है।

एस.डी.जी. अपने मूल रूप में महत्वपूर्ण लक्ष्यों को लेकर चल रहा है। उम्मीद की जानी चाहिए कि, इससे हमारी आज की दुनियां में प्राकृतिक संसाधनों, परितन्त्रों पर्यावणीय संकटों से निबटने में मदद मिलेगी। इससे उन असमानताओं को कम करने में मदद मिलेगी जो समाजिक, आर्थिक और लैंगिक रूप में हमारी दुनिया में दिखाई देती है। इन सब बातों के बावजूद एस.डी.जी. के कई कमजोर पहलू भी हैं। सबसे बड़ा सवाल यह है कि, क्या व्यवहारिक रूप में लक्ष्यों को जमीन पर क्रियान्वित करना इतना आसान होगा। देश और दुनिया में भुखमरी, गरीबी हटाने के प्रयास पूर्व से चल रहे हैं पर सफल नहीं हुए ऐसे में एस.डी.जी. कितना सफल होगा इन लक्ष्यों में कई लक्ष्य ऐसे हैं जो सामाजिक जागरूकता और पहल के बगैर संभव नहीं अतः एक सवाल यह भी कि, व्यापक सामाजिक भागीदारी किस प्रकार से होगी। कई बार हमने देखा है कि आंकड़े और मापदण्ड बदलकर लक्ष्य हासिल कर लिये जाते हैं एस.डी.जी. इस प्रक्रिया से कैसे बचेगा? इसके क्रियान्वयन का जिम्मा दुनिया के देशों की सरकारों का है। क्या दुनिया के सभी देशों की सरकारें इन लक्ष्यों का क्रियान्वयन ईमानदारी से प्राथमिकता के आधार पर करेंगी?

एस.डी.जी. मुख्य रूप से मानव, पृथ्वी, समृद्धि, शांति, साझीदारी पर आधारित है जो भय भूख और गरीबी मुक्त समानता भरी दुनिया की बात करता है। यदि हम इन लक्ष्यों को प्राप्त कर पाते हैं तो हमारी खूबसूरत धरती के प्रति हमारा आभार होगा। इसमें एक समस्या समय सीमा को लेकर भी है कई लोग मानते हैं कि, जब इसी अवधि में सहस्राब्दी विकास लक्ष्य प्राप्त नहीं किये जा सके तो इसी अवधि में अधिक व्यापकता वाले सतत विकास लक्ष्यों को कैसे प्राप्त कर लिया जायेगा।

कई लोग मानते हैं कि, 169 लक्ष्य एक विशाल लक्ष्य है।

अर्थशास्त्री मानते हैं कि, अगले 15 वर्षों में गरीबी भूख मिटाने व अन्य टिकाऊ लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए दो से तीन खरब डॉलर की आवश्यकता होगी।

गरीबी समाप्ति की बात करें तो इसके अंर्तगत गरीबी रेखा के मापदंड 1.25 डॉलर प्रतिदिन पर्याप्त नहीं है अतः व्यवहारिक तौरपर गरीब लोग भी आंकड़ों में गरीबी रेखा के उपर चले जायेंगें।

सतत विकास लक्ष्य 2030 (S.D.G. 2030)

संतत विकास लक्ष्यों में पहला लक्ष्य दुनिया से किसी भी रूप में गरीबी को समाप्त करना है। कहा गया है कि आज भी दुनिया के पांच में से एक व्यक्ति 1.25 डॉलर प्रतिदिन से कम पर गुजरा करता है। अतः गरीबी दूर करने के लिए बुनियादी सुविधाओं और संसाधनों का विकास किया जायेगा और बच्चों, महिलाओं, समुदायों की निर्णयों में भागीदारी बढ़ाई जायेगी।

दुनिया से भूखमरी का अंत करने के लिए सभी को बेहतर पोषण और खाद्य सुरक्षा देने के लिए समय के अनूकूल ऐसी खेती को बढ़ावा दिया जायेगा जो उत्पादन/उत्पादकता बढ़ाने के साथ पर्यावरण और पारिस्थितिकी के अनूकूल हो। कुपोषण का अंत किया जायेगा और शून्य से पांच वर्ष तक के बच्चों, किशोरियों, गर्भवती महिलाओं, असुरक्षित परिस्थितियों में जी रहे लोगों को पोषण उपलब्ध करवाना होगा।

तीसरा लक्ष्य दुनिया में सभी को स्वास्थ्य और स्वस्थ जीवन प्रदान करना। इसमें मातृ–शिशु मृत्यु दर में कमी लाना, मलेरिया, एड्स, तपेदिक पोलियो से होने वाली मौतों में कमी लाना, प्रदूषण के कारण होने वाली बीमारियों और मौतों में कमी लाना, महामारियों को रोकना मादक द्रव्यों और सड़क दुर्घटना में होने वाली मृत्युओं को निम्न स्तर पर लाना है।

सतत विकास का चौथा लक्ष्य दुनिया में सभी को समावेशी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने और हर उम्र में सीखने के अवसरों को बढ़ावा दिया जायेगा और वर्ष 2030 तक सभी बालक और बालिकाओं को परिणाम आधारित प्राथमिक व माध्यमिक शिक्षा प्रदान करना है।

सतत विकास का पांचवा लक्ष्य दुनिया में लैंगिक भेदभाव समाप्त करना और लड़कियों और महिलाओं को सशक्त बनाना है। दुनिया में महिलाओं और लड़कियों के प्रति सभी भेदभाव समाप्त करना, उनके साथ हिंसा, अपराधों पर रोक, उनके लिए हानिकारक प्रथाओं पर रोक, उनके सशक्तीकरण के कानून बनाकर लागू करना, उनको यौन/प्रजजन अधिकार, अनिवार्य माध्यमिक शिक्षा, निर्णय में उनकी भागीदारी आदि इसमें प्रमुखता से शामिल हैं।

वर्ष 2030 तक दुनियाभर में सबको सस्ता, सुरक्षित, सार्वभौमिक और सबकी समान पहुँच में मौजूद पानी उपलब्ध कराना, सभी के लिए न्यायपूर्ण स्वच्छता तक पहुँच तय करना, खुले में शौच समाप्त करना, लड़कियों और महिलाओं की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर स्वच्छता सुविधाओं को विकास, पानी की गुणवत्ता में सुधार, इस्तेमाल किये पानी को फिरसे इस्तेमाल लायक बनाना सतत विकास का छठा लक्ष्य है।

वर्ष 2030 तक सस्ती, आधुनिक और विश्वसनीय ऊर्जा सेवाओं तक सबकी पहुँच सुनिश्चित करना तथा ऊर्जा के परंपरागत स्रोतों के बजाए पुर्ननवीकरणीय ऊर्जा के विकास के लिए बुनियादी साधन जुटाना **S.D.G** का सातवां लक्ष्य है।

सतत विकास का आठवां लक्ष्य वर्ष 2030 तक दुनिया मे सभी के लिए उत्पादक रोजगार की व्यवस्था तय करते हुए लगातार चलने वाले समावेशी आर्थिक विकास को आगे बढ़ाना है। इसमें प्रति व्यक्ति आर्थिक विकास को बनाये रखना, तकनीकी विकास और नवीनता द्वारा उच्च उत्पादन स्तर हासिल करना, ऐसी नीतियां बनाना जो उत्पादन के साथ–साथ नये रोजगार सृजन करे और छोटी, मध्यम, बड़े सभी आकार के उद्यमों के विकास में सहायक सिद्ध हो। पर्यावरण सुरक्षा का ध्यान रखते हुए सभी महिला पुरूषों के लिए पूर्ण और उत्पादक रोजगार समान कार्य के लिए समान वेतन, दासता/बंधुआ मजदूर/बाल श्रम जैसी कुप्रथाओं पर रोक लगाना शामिल है।

वर्ष 2030 तक उद्योगों के लिए लचीले बुनियादी ढांचे का निर्माण करने के साथ ही टिकाऊ और लचीले औद्योगिकरण को बढ़ावा देना सतत विकास का नौवा लक्ष्य है।

सतत विकास का दसवां लक्ष्य दुनिया में देशों के बीच आय असमानता कम करने के साथ–साथ देशों के भीतर भी आय असमानता को न्यून स्तर पर लाना है।

सुरक्षित सशक्त शहरों का विकास करते हुए शहरों व मानव बस्तियों को सभी के लिए बेहतर बनाना, टिकाऊ और परिवर्तनीय बनाना सतत विकास का ग्यारवहां लक्ष्य है।

बारहवां लक्ष्य दुनिया में संसाधनों का जिम्मेदारी पूर्वक उपयोग करने के लिए उत्पादन और खपत का एक नमूना सुनिश्चित करना ताकि भविष्य के लिए संकट पैदा न हो।

संतत विकास का तेरहवां लक्ष्य कहता है कि, दुनिया के देशों को 2030 तक जलवायु परिवर्तन और उसके प्रभावों को न्यून करना होगा। इसके लिए तत्काल कार्बन उत्सर्जन कम करने, पुर्ननवीकरणीय ऊर्जा का विकास और पर्यावरण केन्द्रित विकास की ओर कदम उठाने होंगे।

सतत विकास की प्रक्रिया आगे बढ़ती रहे अतः दुनिया में महासागरों, समुद्रों, समुद्री संसाधनों का संरक्षण करना होगा। समुद्री संसाधन सतत रूप से बने रहें और भावी पीढ़ियां भी इसका लाभ उठाती रहें इसके लिए संसाधनों का सयंमित और टिकाऊ उपयोग सुनिश्चित करना होगा।

सतत विकास का पंद्रहवां लक्ष्य कहता है कि, हमारी धरती पर मौजूद जमीनी परिस्थितिकी तन्त्र, सुरक्षित जंगलों भूमि, जैवविधता को हो रहे नुकसान को रोकना होगा। इन संसाधनों को बचाते हुए एक ऐसी व्यवस्था बनानी होगी जो जंगलों को बेहतर तरीके से प्रबंधन कर सकें।

शांति न्याय और संस्थाओं से संबंधित सतत विकास का सोलहवां लक्ष्य कहता है कि, स्थाई विकास के लिए हमको शांतिपूर्ण और सबको लेकर चलने वाले समाजों को बढ़ावा देना होगा यह भी तय करना होगा कि दुनिया में सभी की न्याय तक आसान पहुँच हो। हमें अपनी संस्थाओं और संस्थानों को सभी स्तर पर प्रभावी और जवाब देह बनाना होगा साथ ही सुनिश्चित करना होगा कि यह सबको साथ लेकर चले।

सतत विकास का सत्रहवां लक्ष्य कहता है कि सतत विकास के लक्ष्य तभी हासिल किये जा सकते है जब दुनिया के सभी देश साझा कदम उठायें। इसके लिए विश्व स्तर पर इन लक्ष्यों के क्रियान्वयन के लिए दुनिया के देशों को साझेदारी करनी होगी साथ ही लक्ष्यों को लागू करने के साधनों को भी मजबूत करना होगा।

क्या है सतत विकास?

औद्योगिक क्रान्ति दुनिया की एक महत्वपूर्ण घटना है जिसने कई मायनों में दुनिया को बदलकर रख दिया मशीनी युग का आगाज हुआ दुनिया में खेती में नये तौर–तरीके अपनाये जाने लगे। दुनिया में बड़े–बड़े निर्माण कार्य हुए जल थल और वायु परिवहन का विकास हुआ। आधुनिक विकास ने काफी हद तक हमारे जीवन जीने के तौर–तरीकों को बदल कर रख दिया। 1960 का दशक में आधुनिक विकास की इस प्रक्रिया के नकारात्मक प्रभाव की सामने आने लगे। ऐसा इसलिए था कि, आधुनिक विकास की प्रक्रिया ने प्राकृतिक संसाधनों और पर्यावरण के विनाश का खतरा उत्पन्न कर दिया। भावी पीढ़ियों के सम्मुख जल, जीवाश्म ईंधन खनिज, वन, मृदा जैसे जैविक संसाधनों का संकट पैदा होने लगा। 1962 में रॉकल कालसन ने पहली बार दुनिया का ध्यान इस तरफ खींचा। उन्होंने बताया कि, खेती में प्रयोग हो रहे कीट नाशकों ने वन्य जीवन के लिए खतरा पैदा कर दिया है। कालसन ने कहा कि विकास, पर्यावरण और समाज के बीच पारस्परिक संबंध हैं। यह सतत विकास के सिद्धान्त की नींव थी यही विचार धीरे–धीरे विकसित होकर सतत विकास प्रक्रिया के रूप में सामने आया। आइये जानते हैं कि, सतत विकास आखिर है क्या?

सतत विकास का शाब्दिक अर्थ है लगातार चलने वाला या स्थाई विकास। वर्ष 1987 में आई संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट अवर कॉमन फ्यूचर में विकास की एक नई परिभाषा देते हुए कहा गया कि, विकास पर्यावरण का संरक्षक होगा। विकास की प्रक्रिया में ध्यान रखा जाए कि, वर्तमान पीढ़ी के साथ भावी पीढ़ियों की आवश्यकतापूर्ति भी सुनिश्चित हो विकास की योजनायें सबसे गरीब व्यक्ति को ध्यान में रखकर बनाई जायें। इस रिपोर्ट में पहली बार संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा सतत विकास शब्द का इस्तेमाल किया गया।

सतत विकास की ऐसी प्रक्रिया है जो धरती की सहन शक्ति के अनुसार विकास की बात करती है। यह प्राकृतिक संसाधनों का सीमिति उपयोग की बात करती है ताकि, भावी पीढ़ियों के लिए इन संसाधनों का गंभीरता पूर्वक संरक्षण किया जा सके। इसमें विकास से अर्थ है कि, पर्यावरण को बचाते हुए विकास का काम लगातार चलता रहे और पर्यावरणीय विनाश का कारण न बने। सतत विकास लम्बे समय तक चलने वाली विकास की एक योजना है जिसके उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

धरती के प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करना।

विविधताओं की रक्षा करना प्रकृति के अनुरूप कार्य करने वाली तकनीकों का विकास करना।

विकास की नीतियों में आम लोगों को शामिल करना। सरकारों और उनकी संस्थाओं को जनता के प्रति जवाब देह बनाना।

दुनिया में सभी लोगों का जीवनस्तर न्यायपूर्ण समानता के स्तर पर लाना।

धनी देशों द्वारा गरीब देशों के पर्यावरण को नुकसान पहुंचाये बगैर उनके विकास में मदद करना।

दुनिया के सभी देशों के बीच शांति पूर्ण संबंध।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि, सतत विकास का अर्थ पर्यावरण और परिस्थितिकी की क्षमताओं और सहनशीलता के हिसाब से मानव जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाना है। ऐसी आर्थिक उन्नति जो हमारी धरती में मौजूद सीमित संसाधनों को नष्ट किये बिना दुनिया के सभी लोगों को न्याय और विकास के समान अवसर प्रदान करें। सतत विकास आर्थिक विकास की नीतियों को पर्यावरण के अनुरूप बनाना है ताकि पर्यावरणीय असंतुलन न हो और संसाधनों का क्षमता से अधिक दोहन न हो सके और वह हमेशा एक स्तर पर बनी रहें। यह हमें बताती है कि विकास पर्यावरण और पारिस्थितिकी के विनाश की कीमत पर नहीं होना चाहिए और दुनिया में सभी को न्याय, सम्मान, समृद्धि, शांति का वातावरण मिलना चाहिए। यह प्रक्रिया सामाजिक, आर्थिक, पर्यावरणीय, राजनैतिक और सांस्कृतिक घटकों के बीच सामंजस्य स्थापित करने की बात करती है। यह सामाजिक आर्थिक विकास का ऐसा तरीका है जो पर्यावरण और सामाजिक समानता को सुरक्षित रखने में सक्षम है।

मेरी कहानी– मैं हूँ किकड़ी (दालचीनी)

अपनी दुनियां के सभी दोस्तों को मेरा नमस्कार, दोस्तो मैं सदियों से मनुष्य का दोस्त बनकर उसके खान–पान का हिस्सा रहा हूँ। एक मसाले के तौर पर मुझे दुनिया भर की भोजन संस्कृति का हिस्सा बनने का मौका मिला दोस्तों क्या आप समझे कि मैं कौन हूँ? नहीं तो चलो एक और इशारा देता हूँ कई बार लोग मुझे चीनी से जोड़कर देखते हैं। समझ गये न मैं कौन हूँ? चलो जो नहीं समझ पाये हैं मैं उनको बताता हूँ। मैं दालचीनी हूँ और संबंध लौरेसिई (Launccae) परिवार से है। मेरा वैज्ञानिक नाम Cinnamonum Verun है अंग्रेजी भाषी मुझे True cinnamon tree के नाम से भी जानते हैं।

मैं एक छोटे कद का परंतु सदाबहार पेड़ हूँ। मेरे भली भांति विकसित पेड़ की अधिकतम ऊँचाई दस से पंद्रह मी0 तक होती है। तेलगू लोग मुझे लवंग पत्ता, तमिल लायंगम और गुजराती में तेजा नामों से जानते हैं संस्कृत में मेरा नाम दारुसिता, वारंग है।

रिहाईश के लिए मुझे समुद्र तटीय से 2500 मीटर की ऊँचाई पसंद आती है। मुझे सामुदायिकता काफी पसंद है इसलिए मैं अन्य प्रजातियों के बीच घुलमिलकर रहना पसंद करता हूँ। मेरा विकास धीमी गति से होता है। मेरी पत्तियों की औसत लम्बाई पंद्रह सेमी0 और चौड़ाई सात सेमी तक होती है। बसंत और गर्मियों के दौरान मेरी नई कोयलें आती है। मेरी नई पत्तियां लालिमा लिये लम्बई रंग की होती हैं जो वयस्क होने पर हरे रंग की हो जाती हैं। मेरे फूल बसंत के दौरान आते हैं सफेद रंग के मेरे फूल काफी छोटे होते हैं जो गर्मियां आते–आते छोटे बीजों में बदल जाते हैं। मैं सूरज की गर्मी में रहना पसंद करता हूँ परन्तु मेरा निवास वहां भी पाया जाता है जहां पर सूरज की धूप आंशिक रुप से पड़ती है। मुझे औसतन पंद्रह डिग्री सेल्शियस का तापमान काफी पसंद आता है। साथ ही मैं ऐसी जगहों पर काफी खुश रहता हूँ जहां पर पानी की निकासी अच्छी तरह से हो। मेरा परिपक्व फल बैंगनी रंग का होता है। बीज फल के भीतरी हिस्से में पाया जाता है जोकि भूरे रंग का होता है। मेरा मुख्य तना एक मीटर तक मोटाई लिए हो सकता है। मुख्यतने को घेरे हुए मेरी छाल हरे और भूरे रंग की होती है जिसकी मोटाई आठ से तेरह मिली मी0 तक होती है। दोस्तों मैं एशिया महाद्वीप में भारत, श्रीलंका, चीन, पूर्वी द्वीपों पर बहुतायत से पाया जाता हूँ। हमारे देश की बात करें तो मैं दक्षिण भारत से होकर हिमालय तक पाया जाता हूँ। पूर्वी हिमालय के इलाकों असम सिक्किम, नागालैण्ड में आप मेरी बड़ी आबादी पायेंगे। उत्तराखण्ड में भी मैं 2500 मीटर की ऊँचाई तक पाया जाता हूँ।

दोस्तों इंसानों से मेरी दोस्ती काफी पुरानी है। हमारी दोस्ती के महत्व का अंदाज आप इसी बात से लगा सकते हैं कि आज से दो हजार वर्ष पूर्व मिश्रवासी मेरा आयात करने लगे थे। प्राचीन भारतीय ग्रन्थों में भी मेरा उल्लेख मिलता है। भारत से अरब, ग्रीस, इटली, यूरोप में भी मेरा निर्यात सदियों पहले शुरु हो चुका था। दोस्तों मैं प्रकृति अनुकूल वृक्ष होने के साथ–साथ बहुपयोगी भी हूँ। यही कारण है कि इंसान हजारों वर्षो से भोजन व औषधियों के रुप में मेरा इस्तेमाल कर रहा है। मेरी पत्तियों और छाल को उसके सुगंधित और औषधीय गुणों के कारण जाना जाता है। मेरी छाल का उपयोग गरम मसाले के रुप में भारतीय भोजन में काफी ज्यादा होता है। दुनिया के कई हिस्सों में मुझे मीठे व्यंजनों में भी इस्तेमाल किया जाता है।

मेरी छाल तेल बनाने में भी उपयोग होती है मेरा नियमित प्रयोग कोलेस्ट्राल स्तर को 20 प्रतिशत तक कम कर सकता है। मेरा उपयोग मिलती, पेट फूलना, दस्त, ठंड, खांसी, भूख, अपच आदि का उपचार करने में किया जाता है। वैज्ञानिकों ने पाया है कि मेरे संक्रमण रोधी गुण कैंसर ग्रस्त कोशिकाओं के विस्तार को रोकने में सहायक हैं। दोस्तों मैं उत्तराखण्ड के लगभग सभी क्षेत्रों में पाया जाता हूँ अगर अपने आस–पास देखेंगे तो जरुर हमारी मुलाकात हो जायेगी। मुझे अपना प्राकृतिक परिवेश काफी प्रिय है पर मेरे गुणों और महत्व को देखते हुए कई जगहों पर मेरी खेती भी की जाने लगी है। प्राकृतिक आवास में मेरी जनसंख्या का विस्तार बीज द्वारा होता है। जो लोग व्यवसायिक तौर पर मेरी खेती करते हैं। वह कलम के द्वारा मेरी पौंध का उपयोग करते हैं। अगर आप हमारी इस दोस्ती को आगे बढ़ाना चाहते हैं तो जून से अगस्त तक मेरे फल परिपक्व हो जाते हैं। एक फल लें और उसका गूदा हटा दें। पूरा गूदा हटाने के बाद सुखा लें। अच्छी जगह देखकर नम मिट्टी में इन बीजों को रोप दें। बीस से पच्चीस दिन में आपके नन्हें दोस्त अंकुरित होने लगेंगे और आपको मिल जायेंगे कुछ नये दोस्त।

आओ खेलें खेल

रुमाल उठाओ

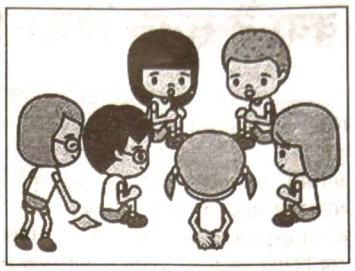

साथियों रुमाल उठाओ एक साधारण परन्तु रोचक खेल है। यह खेल बड़े समूहों में खेलने के लिए काफी उपयुक्त है। इस खेल में हमें जितना मानसिक और शारीरिक तौर पर चुस्ती दिखाने की आवश्यकता होती है। उतनी ही जरुरत होती है तुरंत प्रतिक्रिया देने की। यह खेल मैदान में या किसी लम्बी चौड़ी जगह पर खेला जा सकता है और जरुरत होगी एक रुमाल की इस खेल के लिए हमको दो टीमों और एक निर्णायक की आवश्यकता होगी। मैदान अथवा खेलने वाली जगह के बीचों बीच एक रेखा खींच दें। इस रेखा के मध्य में एक मीटर व्यास का एक गोला बना दें। अब मैदान के दोनों छोरों पर भी एक–एक रेखा खीच दें। ध्यान रहे कि मध्यरेखा से दोनों छोरों पर खींची गई रेखाओं की दूरी बराबर हो।

अब समूह से एक साथी को निर्णायक बना दें और निर्णायक बचे साथियों को दो टीमों में बांट दें। दोनों टीमों को एक–एक छोर पर खड़ा करें। उनको निर्देश दें कि दोनों टीमों को अपने छोर की रेखा से आगे नहीं बढ़ना है। अगले चरण में निर्णायक दोनों टीमों के सभी सदस्यों को एक नम्बर देगा। जैसे– एक, दो, तीन, चार, पांच। हर व्यक्ति को अपना नम्बर याद रखना है और तुरंत प्रतिक्रिया देनी है। निर्णायक रुमाल को मध्यरेखा के बीच में बने घेरे में रख देगा।

खेल शुरु– अब हम खेल शुरु करने के लिए तैयार हैं। निर्णायक कोई एक संख्या पुकारेगा। उदाहरण के लिए निर्णायक द्वारा पुकारा गया चार तो दोनों टीमों से चार संख्या वाला खिलाड़ी तेजी से मध्य रेखा क तरफ दौड़ेगा और रुमाल लेने की कोशिश करेगा। जिस टीम का खिलाड़ी लेकर अपनी टीम में वापस पहुंचेगा उसे एक अंक मिल जायेगा। इस प्रकार निर्णायक संख्या पुकारता रहेगा दोनों टीमों के उस संख्या वाले खिलाड़ी आकर रुमाल लेंगे, एक दूसरे को रोकने की कोशिश करेंगे।

आधा घंटे की अवधि में जो भी टीम अधिक अंक जुटा लेगी वह विजेता मानी जायेगा। खेल पूरा हो जाने पर पूरा समूह एक गोल घेरे में बैठकर चर्चा करे कि, दोनों टीमों ही हार और जीत के क्या कारण रहे?

अंक जुटाने वाले खिलाड़ी और अंक न जुटा पाने वाले वाले खिलाड़ियों के खेल में क्या अन्तर था?

समूह को खेल कैसा लगा?

आओं बनाये (बातूनी कौवा)

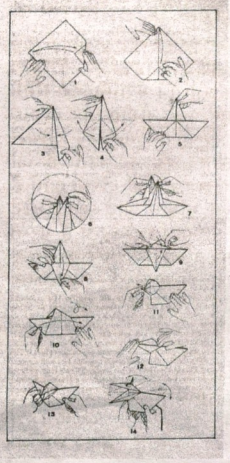

साथियों कांव–कांव करते कौवों को देखकर लगता है कि, कितने बातूनी होते हैं यह कौवे। कितना अच्छा होगा कि, हम भी एक कागज लेकर बातूनी कौवा बना सकें। अपनी दुनिया के इस अंक में हम आपकी दिमागी कसरत और मनोरंजन के लिए हम बातूनी कौवा बनाने की विधि बता रहें हैं।

यह कौवा बनाने क़े लिए हमें एक चौकोर कागज की आवश्यकता होंगी। चित्र संख्या एक की तरह कागज को रखकर बीच से मोड़ें। चित्र संख्या दो की तरह नीचे से ऊपर तक आधे में मोंड़ो। तिकोनी के बाएँ–दाएँ सिरों को मध्य रेखा तक मोड़ों चित्र संख्या तीन की तरह। चित्र संख्या चार के अनुसार नीचे के दोनों हिस्सों को बिन्दुओं वाली लाइन तक मोड़ो।

इस समय आपका मॉडल चित्र संख्या पांच की तरह दिखेगा। अब उपर के भाग में से अन्दर की तह को खींचकर बाहर निकालो चित्र संख्या छहः। अब चित्र सात की तरह अन्दर की तह को तब तक खींचो जब तक दोनों तहें एक दूसरे के उपर न बैठ जाएँ। चित्र संख्या आठ को देखकर उपरी नोक को नीचे तक मोड़कर एक बर्फी जैसी बनाओ। अब उपर और नीचे के तिकोनो को लेकर आधे में तिरछा मोड़ो चित्र संख्या नौ। आपका मॉडल अब चित्र संख्या दस की तरह दिखेगा। कागज को अब पलट दें जिससे निचला वाला हिस्सा उपर आ जाए। मॉडल को अब दाएँ तक मिलाकर आधे में मोड़ें (चित्र संख्या ग्यारह) अब निकले हुए दोनों सिरों को बाँई ओर खींचे चित्र संख्या बारह की तरह और चित्र संख्या तेरह की तरह कौए की चोंच बनाओ।

अब आप कौवे के पंखों को खोल और बन्द कर सकते हैं पंख खोलने और बन्द करने से वह बात करने लगेगा चित्र संख्या चौदह। कौवा अपनी चोंच से कागज, सुतली और अन्य हल्की चीजें उठा सकते है।

कविता:

धरती के दुश्मन तीन

पन्नी प्लास्टिक पॉलीथीन,
धरती के हैं यह दुश्मन तीन।
प्रदूषण का बनते कारण,
नहीं अभी तक इनका निवारण।
धरती में जब ये पड़ जायें,
सदियों तक हैं राज चलायें।
कभी खत्म नहीं होती हैं,
धरती की सेहत खोती है।
जानवर के पेट में जब पहुँत जाये,
जान पर उसकी तब बन आये।
जलाओ तो गैसें फैलायें,
जिसकी चपेट में सब जीव आयें।
सी2एस2 (एम) का है ये कमाल,
इसने कर दिया जीना बेहाल।
आज है यह खतरा सबसे बड़ा,
चारों तरफ है बिखरा पड़ा।
अगर इस पर ना रोक लगायेंगे,
सोचो धरती कैसे बचा पायेंगे।
आओ हम मिलकर कदम बढ़ायें,
धरती को अपनी स्वच्छ सुन्दर बनायें।
पन्नी प्लास्टिक पॉलीथीन,
धरती के हैं यह दश्मन तीन।

– मैं मोसम हूँ –

मैं मौसम हूँ मेरे अनेकों रुप,
कहीं बरसते बादल हैं तो कहीं चटक है धूप!
मेरा साथ सभी को भाता,
मैं ही रंग बिरंगे मौसम लाता।
सुनो पहले गर्मी का हाल,
जो करती तुम सबको बेहाल।
पानी ठंडा सबको भाये,
नदी में डुबकी सभी लगायें।
अब आई बारिश की बारी,
लेकर आई बूंदें प्यारी प्यारी।
बसंत की तो बात निराली,
चारों तरफ बिखर जाती हरियाली।
जाड़ों की तुम देखो लीला,
मौसम है यह रंग–रंगीला
ऊनी कपड़े सबको हैं भाये
धूप खिली सब घर से बाहर आये।
अब सुनो मेरी इक बात ध्यान से
धरती का जब पर्यावरण बचेगा,
तभी हमारा साथ चलेगा।
मैं मौसम हूँ मेरे अनेकों रुप,
कहीं बरसते बादल हैं तो कहीं चटक है धूप।

किरन
ग्रीन क्लब कोट्यूड़ा

हमारा भूगोल – टिहरी गढ़वाल

टिहरी गढ़वाल उत्तराखण्ड के गढ़वाल मंडल का एक प्रमुख जिला है। यह मध्य हिमालय की बाहरी श्रेणियों में स्थित है। टिहरी जिला उत्तर में उत्तरकाशी पूर्व में रुद्रप्रयाग दक्षिण में पौड़ी गढ़वाल और पश्चिम में देहरादून जिले से घिरा है। पश्चिमी भाग में यमुना नदी इसकी और देहरादून जिले की सीमाओं को विभाजित करती है।

जिले का कुल क्षेत्रफल 3642 वर्ग किमी0 है और जिले में 321564 हेक्टेयर वनभूमि है। प्रशासनिक दृष्टि से देखें तो जिला 7 तहसीलों और 1 उपतहसील में बंटा हैं जिले में व विकासखण्डों के अन्तर्गत 75 न्याय पंचायतें हैं और ग्राम पंचायतों की संख्या 979 है। टिहरी जिले में आबाद ग्राम 1768 हैं जबकि गैर आबाद गांवों की संख्या 42 है जिले में 26 वन ग्राम भी है। टिहरी जिले में 2 नगर पालिका और 4 नगर पंचायतें भी हैं। टिहरी जिले का मुख्यालय पूर्व में नरेन्द्र नगर में था परन्तु वर्ष 1999 से यह नई टिहरी शहर में स्थानान्तरित हो चुका है।

जिले में लोकसभा राज्य सभा और 7 विधानसभा क्षेत्र शामिल हैं। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार जिले की कुल जनसंख्या 616409 है। यहां पर प्रति हजार पुरुषों पर 1078 महिलायें हैं एवं 0 से 6 वर्ष आयुवर्ग में प्रति 1 हजार बालकों पर बालिकाओं की संख्या 927 है। जिले में साक्षरता की कुल दर 75.10 प्रतिशत है। महिलाओं की साक्षरता दर 61.77 प्रतिशत तथा पुरुषों की साक्षरता दर 89.91 प्रतिशत है। टिहरी जिला ऋषिकेश की तलहटी में शिवालिक की पहाड़ियों से उच्च हिमालय में स्थित गंगोत्री समूह की हिमाच्छादित पर्वत श्रंखलाओं तक विस्तृत है। जिले की अधिकांश भौगोलिक संरचना पर्वतीय हैं वनसंपदा के मामले में जिला काफी समृद्ध है और इसका एक बड़ा हिस्सा वन है

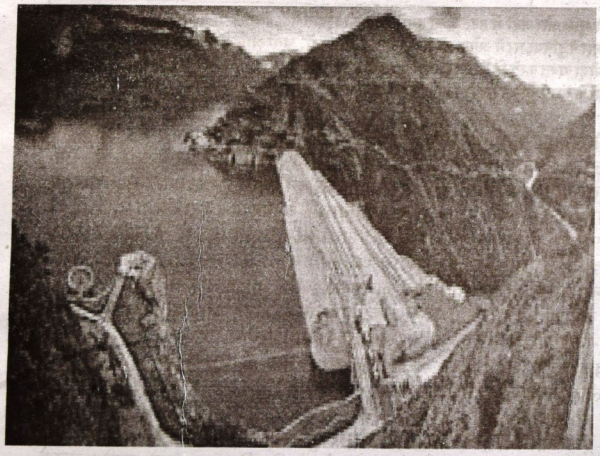

जो न सिर्फ पारिस्थितिकी बल्कि यहां की आर्थिकी में भी बड़ा योगदान करता है। ये वनक्षेत्र अपनी समृद्ध जैवविविधता और दुर्लभ वनस्पति प्रजातियों के लिए प्रसिद्ध हैं।

भागीरथी, भिलंगना और गंगा यहां की प्रमुख नदियां हैं इसके अतिरिक्त कई सहायक नदियां भी इस जिले में हैं। गोमुख से निकलने वाली भागीरथी पुरानी टिहरी में भिलंगना को अपने साथ ले लेती है। इसी स्थान पर वर्तमान में एशिया का सबसे बड़ा 'रॉकफिल' तकनीक का बांध है। बांध बन जाने के कारण पुराना टिहरी शहर बांध की झील में समा चुका है।

यहां से आगे बढ़ने पर देवप्रयाग नामक स्थान पर भागीरथी एक और नदी अलकनंदा से मिल जाती है और यहीं से उसे गंगा के रुप में जाना जाता है।

टिहरी जनपद में हिमालयी क्षेत्र में पाई जाने वाली वनस्पतियों की प्रजातियों की विशाल संख्या है। जिले के वन क्षेत्रों को हम चार भागों में बांट सकते हैं।

1. उष्ण कटिबन्धीय शुष्क पर्णपाती वन– यह वन बारह सौ मीटर की ऊँचाई तक पाये जाते हैं इनमें मुख्यतः कुरी, केमेला, झिंगान और भंडार आदि प्रजातियां पाई जाती हैं।

2. सालवन– जिले में इन वनों का विस्तार लगभग 1066 मी0 तक मिलता है। इन वनों में साल, शीशम, हल्दू, खैर, संत बाकली, रौहिनी, झिंगन, कान्जू संथन आदि प्रजातियां प्रमुख हैं।

3. चीड़वन– चीड़वन 900 मी0 ऊँचाई से लेकर 2000 मी0 की ऊँचाईयों तक पहाड़ी ढलानों, नदी घाटियों में पाये जाते हैं। इन वनों में चीड़ प्रजाति के वृक्ष ही होते हैं क्योंकि चीड़ धीरे–धीरे धरती की नमी कम कर देता है जिससे वहां अन्य प्रजातियां नहीं पनप पाती हैं।

4. देवदार/स्प्रूस/बांज वन– इन वनों का विस्तार 3050 मी0 तक पाया जाता है। यह सबसे अधिक जैव विविधता वाले वन्य क्षेत्र हैं। यहां पर मुख्यतः देवदार, खर्सू, मोरु, बांज, रियांज, तिलौंज, साल, सिल्वर फर, भोजपत्र, बुरांश, काफल, उतीस, रिंगाल जैसी अनगिनत प्रजातियां पाई जाती हैं।

5. अल्पाइन घास के मैदान– लगभग 3500 मी0 (जहां वृक्षरेखा खत्म होती है) से 5000 मी0 तक इसका विस्तार मिलता है। बुग्याली घास, औषधीय वनस्पतियों और दुर्लभ पुष्पों की बहुतायत वाला क्षेत्र विशाल के रुप में भी जाना जाता है। कुश कल्याणी और पवाली यहां के प्रमुख बुग्याल हैं।

यह जिला स्तनपायी, पक्षियों, सरीसृपों और मछलियों की तमाम प्रजातियों के चलते समृद्ध और विविधता भरा माना जाता है। वन्य जीवों में यहां पर सांभर, घुरड़, कस्तूरी मृग, हिमालयी नीली भेड़ (भरल) हिमालयी, चीतल, तेन्दुआ, हिमतेन्दुआ, हिरन, गिलहरी, भूरा भालू, काला भालू, सफेद भालू, बंदर, लंगूर, जंगली बिल्ली, सुअर, लोमड़ी आदि प्रमुखता से पाये जाते हैं। इसके अलावा कई प्रजातियों के पक्षी, सरीसृप और मछलियां भी यहां पर पाये जाते हैं। टिहरी जिले में मुख्यतः हिन्दू, मुस्लिम, सिख, बौद्ध, जैन, ईसाई धर्म को मानने वाले लोग रहते हैं। अतः यहां पर सभी धर्मो के त्यौहार मिल जुलकर मनाये जाते हैं। अपनी आजीविका के लिए अन्य पर्वतीय क्षेत्रों की भांति ही लोग मुख्यतः खेती और पशुपालन पर निर्भर करते हैं। यहां पर मुख्य रुप से धान, गेहूं, जौं, मडुवा, सांवा, दलहन फसलों में उर्द, मसूर, मटर, गहथ, राजमा, चना, भट्ट, मसूर आदि होते हैं। लाही, सरसों, तिल, सोयाबीन, पमुख तिलहन की फसलें हैं इनके अतिरिक्त यहां पर गन्ना, प्याज टमाटर व अन्य सब्जियां भी उगाई जाती हैं। कई लोग भेड़ और घोड़े पालते हैं। इसके अतिरक्त बड़ी संख्या में लोग सरकारी/गैरसरकारी क्षेत्रों में काम करने के लिए मैदानी क्षेत्राों को पलायन का जाते हैं।

जिले में कई स्थान ऐसे हैं जो पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। इसमें बूढ़ा केदार, देवप्रयाग, सुरकण्डा देवी, चंद्रबदनी जैसे धार्मिक पर्यटक स्थल हैं तो, खतलिंग ग्लेशियर चम्बा, धनौल्टी, कैम्पटी फाल, नागटिब्बा, टिहरी झील जैसे दर्शनीय स्थल भी शामिल हैं।

यहां फलों में सेब, संतरा, नाशपती, आड़ू, खुबानी पूलम, किवी, माल्टा, पपीता, आम आदि प्रमुख हैं।

खर-पतवार

मैक्सियन दोष वनमारा

बच्चों, इस झाड़ को आपने अकसर देखा होगा लेकिन मेरी ओर किसी का ध्यान नहीं जाता है। बरसात के बाद सड़कों, रास्तों पर यह खूब उगती है। प्रायः लोग कहते हैं यह घास बहुत उग गई। कई कहते हैं इसे उजाड़ दो यह नुकसानदायक होती है। इसका नाम है बनमारा, नेपाल में इसे बनमारा, कलझाड़ कहते हैं। हिंदी में इसका कोई नाम नहीं है अपितु मराठी में इसे ओसाड़ी और बंगाली में कालो बनमारा कहते हैं। सांप की तरह जड़ फैलने के कारण इसे काष्ठ सर्प जड़ भी कहा जाता है। वनस्पति विज्ञानी इसे ageratina adenophora (अगेरतिना अदेनोफोरा) कहते हैं। ेजमतंबमंम जिस कुल का यह पौधा है की 20 हजार से अधिक प्रजातियां है।

इसके अलावा दुनियां भर में इसे मैक्सियन दोष भी कहा जाता है। इसकी आबादी बड़ी तेजी से फैलती है। यह एक विदेशी प्रजाति हैं और माना जाता है कि मैक्सिको और जमैका से इसका प्रसार हुआ। 19वीं शताब्दी के अंत में यह पौधा सिंगापुर पहुंचा और बाद में जहाजों में माल की पैकिंग के साथ अन्य देशों भारत, नेपाल आदि में इसका प्रसार हुआ। टिड्डी और एक प्रकार की मक्खी को इसके प्रसार का मुख्य कारण माना गया। कई देशों में कीटों के तीव्र प्रसार के कारण इसका नियंत्रण करना कठिन होता चला गया और यह दुनियां भर में फैलने लगा। इस पौधे को आप दुनिया भर में कृषि क्षेत्रों व वन क्षेत्रों में देख सकते हैं। इस पौधे की पत्तियों को घोड़े के लिए विषाक्त माना जाता है और चिकित्सकों का मानना है कि इससे घोड़े में सांस की बीमारी होती है।

यह पौधा वयस्क होने पर एक से दो मीटर बड़ा होता है और इसके पत्ते कन्नी के आकार में हरे और भूरे होते हैं तथा तना भूरा और बाद में सख्त होता है। गर्मियों और पतझड़ के मौसम में इसमें सफेद रंग के फूल आते हैं। यह प्रायः बीज, तने से दूसरे स्थान पर लग जाता है। एक पौधा एक मौसम में एक लाख से अधिक बीज तैयार करता है। पानी, मानव, कीट पतंगों, हवा आदि से इसके बीजों का प्रसार होता है। अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में इसका प्रसार अधिक देखा गया है। यह पौधा मिटटी के संपर्क में आते ही नमी मिलते ही तेजी से फैलाव करता है और उस क्षेत्र में अपनी बस्ती बना लेता है। इसकी जड़ें मिटटी के उपजाऊपन को नष्ट कर भूमि क्षरण का काम करती है। अनेक वैज्ञानिकों का मानना है कि यह पौध मिटटी और पत्थर से पोषक तत्वों को अवश्य खींचता है लेकिन मृदा अपरदन को रोकने में इसी जड़े सहायक होती है। इस पौधे को हम आसनी से हाथ से भी उखाड़ सकते हैं। इसकी जड़े हल्की और कच्ची होती है। इस पौधे को पूरी दुनियां में हानिकारक माना जाता है। इसके कारण दुनियां भर में अत्यधिक फसल को हानि पहुंचती है। अकेले दक्षिणी चीन में बनमारा के कारण खेती को अत्यधिक नुकसान हुआ है। और वहां की स्थानीय जैव विविधता भी खत्म होने लगी। इसके साथ ही पशुओं के लिए इसकी पत्तियों को अधिक मात्रा में खाना हानिकारक होता है। इसी कारण अनेक देशों में रासायनिक, जैविक और अन्य तरीकों से इस प्रजाति के प्रसार पर नियंत्रण के प्रयास भी किए जा रहे है।

अनेक कमियों के बाद भी इस पौधे के अनेक लाभ भी है। दुनियां भर में वैज्ञानिक खासकर चिकित्सा से जुड़े विशेषज्ञ मानते हैं कि इस पौधे में अनेक चिकित्सकीय गुण भी है। इस पौधे में मौजूद रसायन इसकी विशेषता को बढ़ा देते हैं। दुनियां भर में अनेक स्थानों पर इसकी पत्तियों को घावों में उपयोग किया जाता रहा है। इसका प्रलेप घावों में व सूजन में अत्यधिक लाभकारी होता है। परम्परागत चिकित्सा में घाव में खून व दर्द को कम करने तथा सूजन को कम करने में इसकी पत्तियों का रस प्रयोग में लाया जाता रहा है। भारत में ही अनेक स्थानों पर घावों को भरने, पीलिया, गठिया और दस्त आदि में इसके पौधे से औषधि तैयार कर दी जाती है। पशु चिकित्सा के क्षेत्र में पशुओं में सूजन को नियंत्रण करने के लिए बहुधा इसका प्रयोग किया जाता है। इसे रस से जहां पेट दर्द में राहत मिलती है वहीं इसकी सुगंध युक्त पत्तियों से कीट नियंत्रण के सामान तैयार किए जाते हैं। इस सुगंधित पौधे से अनेक प्रकार के रसायन भी तैयार किए जाते हैं। अनेक चिकित्सकीय गुणों के साथ पौधों को उजड़ चुके वनों को फिर से विकसित करने, वनों में वन्य जीवों को संरक्षण देने, खाद बनाने तथा कोयला आदि बनाने में बहुतायत प्रयोग में लाया जाता है। इसी कारण अनेक देशों में इसी व्यवसायिक खेती भी की जाती है। वैज्ञानिक चिकित्सा के क्षेत्र में इस पौधे के अन्य उपयोगों की संभावनाओं को भी तलाश रहे हैं।

कहानी-

चीफ की चिंता

दोस्तो, जब हम अपनी भूमि और जड़ों से हटते हैं या हमारे हटने की स्थिति पैदा होती है तो यह समय अत्यंत कष्टकारी होता है। आधुनिक विकास के मॉडल ने दुनिया भर में अनेक लोगों को उनके घरों, गॉवों, खेतों आदि से बेदखल किया है। उस क्षेत्र के मूल निवासी समय समय पर इसी पीड़ा व्यक्त करते रहे हैं। रेड इण्डियन अमेरिका के मूल निवासी थे और चीफ सिएटल उनके कबीले के मुखिया थे। अमेरिका में रेड इण्डियों के संघर्ष की यह सच्ची कहानी का छोटा अंश आपके लिए-

चीफ सिएटल के चेहरे पर उभरता पसीना और उनके माथे पर चिंता की लकीरें साफ देखी जा सकती थी। यू तो वे एक महान रेड इण्डियन योद्धा थे, जिन्होंने अपने कबीले का नेतृत्व करते हुए अनेक युद्धों में दुश्मनों से लोहा लिया था और कबीले का हर सदस्य उनपर नाज करता था। एक मुखिया के रूप में वे हर सदस्य के सहृदय पिता थे। जो हर बच्चे का ख्याल रखता हो। अपने पोते की आवाज से उनका ध्यान टूटा, वो उनकी गोद में बैठा था और लगातार कोई किस्सा सुनने की जिद करता जा रहा था। चीफ बच्चे को नाराज भी नहीं करना चाहते थे पर वे जिस चिंता से घिरे थे उसके बीच बच्चे पर ध्यान देना संभव नहीं था। अपनी चिंताओं को महसूस करते हुए वे ख्यालों में खोए थे। अचानक उनकी नजरों के सामने पुराने चित्र उभरने लगे। अचानक वे अमेरिका के वाशिंग्टन राज्य के ब्लैक आयरलैण्ड पहुंच गए यह जन्म स्थान था लेकिन नाना का घर। यहां पर उनके पुराने दोस्त भी मिल गए जिनके साथ उन्होंने प्रकृति की गोद में चलना, खेलना आदि सीखा था। यही जगह थी जहां की छलछलाती नदी ने उन्हें आगे चलना सिखाया था और पशु पक्षियों ने आकाश की अनंतता का अहसास कराया था, पेड़ पौधों ने उन्हें प्रकृति से रिश्ता बताया था क्यों उसके सम्मान में झुक जाना चाहिए। उन्होंने अपने बड़ों के साहस के किस्से सुन सुनकर योद्धा बनने का पहला कदम यहीं पर उठाया था। सबकुछ एक चलचित्र की भॉति उनके दिमाग में घूम रहा था। यह वही जगह थी जहां पर वाशिग्टन शहर जन्म लेने वाला था। चीफ के चेहरे को चिंता लगातार अपने प्रभाव में लेते जा रही थी जिसे साफ देखा जा सकता था। अचानक वे ब्लैक नदी के उसी किनारे पर पहुंच गए। ये लगभग 1797 से 1800 के बीच का समय था जब चीफ अपने पोते से छोटे रहे होंगे। अपने कबीले के हर सदस्य की भॉति इस प्रांत के हरे भरे चारागाहों, नदियों, व वनस्पति तथा जीवों से उनका गहरा लगाव था। वे एक रेड इण्डियन के मुखिया थे जो एक आदिवासी कबीला और इस भूमि के असली मालिक थे। जो इस परिवेश के बगैर रहना नहीं चाहते थे जिसमें खेत और आखेट प्रमुख था। इस भूमि में बाहरी लोगों के आने से स्थितियां बदलने लगी। उनके आसपास और कबीले भी थे जो इस भूमि के वारिस थे।

उनको अपने परिवेश और भूमि से बेहद लगाव था और वे उसकी पूजा करते थे। चीफ यह भी जानते थे कि अब एक आजाद कबीला नहीं बल्कि एक विशाल राज्य संयुक्त राज्य अमेरिका का हिस्सा हैं। जो कुछ समय पहले ग्रेट ब्रिटेन के खिलाफ लड़ते हुए बना था। जहां बाकी समुदाय भूमि को व्यक्तिगत संपत्ति मानते थे वहीं रेड इण्डियन कबीले मानते थे कि भूमि जैसे संसाधन सामूहिक होते हैं। चीफ की परेशानी बढ़ते जा रही थी। उनकी परेशानी का मुख्य कारण था अमेरिकी राष्ट्रपति का वह पत्र जिसमें उनसे कहा गया था कि सरकार उनकी जमीन खरीदना चाहती है। ये बात चीफ की समझ से बाहर थी, उनके लिए यह असहज था। उनका मानना था कि जिस प्रकार आकाश नहीं खरीदा जा सकता उसी प्रकार कोई कैसे जमीन को खरीदकर अपना बता सकता है। वे इस बात की कल्पना नहीं कर पा रहे थे कि स्वयं वे और उनकी आने वाली पीढ़ियां इस जमीन के बगैर कैसे जिऐंगे? लेकिन इस पत्र का नजर अंदाज करना भी संभव नहीं है ये भी वे जानते थे।

गहन मंथन और भावनात्मक उतार चढ़ाव के बाद उनके भीतर के योद्धा ने आवाज दी। समस्या पर फिर से नजर दौड़ाओ चीफ, हॉ चीफ तुम इतने कमजोर नहीं हो। इस विचार ने उन्हें दिशा दी। उन्होंने फिर से सोचना शुरू किया। उनका लगा कि सारी उम्र जिस प्रकार से वे एक योद्धा की भॉति जिए हैं आज फिर उन्हें एक योद्धा की भॉति अपने भविष्य के लिए संघर्ष करना होगा। चीफ जानते थे कि ताकत के मामले में वे काफी कमजोर हैं लेकिन अपनी आवाज दबाना भी कायरता होगा। उन्होंने तय किया कि वे अपनी आवाज बुलंद करेंगे इस बात से उन्हें संतोष मिला। चीफ ने अपना पसीना पोछा। फिर उन्हें पोता याद आया जो किस्सा सुनने की जिद कर रहा था। उन्होंने कहा कि हॉ मेरे बच्चे कौन सा किस्सा सुनोगे। चीफ सामान्य हो गए और पोते को किस्सा सुनाया। उस रात चीफ ने राष्ट्रपति को एक पत्र लिखा जिसमें उन्होंने कहा कि धरती मनुष्य की नहीं बल्कि मनुष्य धरती का है। उसने इस जीवन की रचना नहीं की है वह एक कड़ी मात्र है, एक वेब। हालांकि चीफ अपने खेत खलिहानों और शिकार के मैदानों को नहीं बचा पाए पर उनका वह पत्र इतिहास बन गया। विश्व में पर्यावरण रक्षा का अनूठा दस्तावेज, इस पत्र ने चीफ के इस अनूठे संघर्ष को अमर कर दिया और अमेरिका के सिएटल शहर को उन्हीं के नाम पर जाना जाता है। वेब ऑफ लाईफ यही था उस पत्र का नाम जिस पर उनसे उनके किस्से सुनने वाला पोता गर्व कर सकता था।

टीडीएच जर्मनी के माध्यम से तथा आर्थिक सहयोग मंत्रालय जर्मनी के सहयोग से सीमित वितरण हेतु अमन द्वारा प्रकाशित
तथा नवल प्रिंटर्स, अल्मोड़ा से मुद्रित